अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध (परीक्षा 29 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे **अंक : 100**

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) जो जीवन को संस्कृत मानते हैं, वे हैं -

(क) अप्रमत्त (ख) वीतराग

(ग) पर-प्रवादी (घ) आत्मस्थ ( )

(b) संयम का पर्यायवाची नहीं है-

(क)लज्जा (ख) जुगुप्सा

(ग) तितिक्षा (घ) छलना ( )

(c) काम स्कन्ध नहीं है -

(क) क्षेत्र (ख) वास्तु

(ग) पशुगण (घ) काल ( )

(d) 'प्रमाद' का अर्थ है-

(क) आलस (ख) आत्म विस्मृति

(ग) इन्द्रिय विषय (घ) कषाय ( )

(e) 'अप्पायंके' का अर्थ है-

(क) आत्मा (ख) निरोग

(ग) अपनापन (घ) आत्मान्वेषी ( )

(f) 'अजया' का अर्थ है-

(क) अमर (ख) अजर

(ग) अखिलेश (घ) अजितेन्द्रिय ( )

(g) साधक को सावधान रहना चाहिए-

(क) भारण्ड पक्षी के समान (ख) घोड़े के समान

(ग) उल्लू के समान (घ) सिंह के समान ( )

(h) 'बोधि' का अर्थ है-

(क) मति ज्ञान (ख) सम्यक्त्व

(ग) अवधिज्ञान (घ) श्रद्धा ( )

(i) आत्मा से आत्मा की अनुभूति होना है-

(क) सम्यग्ज्ञान (ख) सम्यग्दर्शन

(ग) सम्यक् चारित्र (घ) सम्यक् तप ( )

(j) सम्यग्दर्शन का लक्षण नहीं है-

(क) संवेग (ख) अनुकम्पा

(ग) अनाश्रव (घ) निर्वेद ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) मिथ्या मान्यताएँ, भ्रांति आदि भाव निद्रा के अन्तर्गत हैं। ( )

(b) निक्षेप वस्तु तत्त्व को समझने की अनुपम शैली है। ( )

(c) पदार्थ का संदेह रहित ज्ञान होना 'ध्रुव' कहलाता है। ( )

(d) चक्षुरिन्द्रिय और मन ये दोनों प्राप्यकारी हैं। ( )

(e) खरगोश जरायुज के अन्तर्गत आता है। ( )

(f) उदय समय को प्राप्त कर्म परमाणुओं के अनुभव करने का उदय कहते हैं। ( )

(g) अनुभूति में आने वाला उदय प्रदेशोदय है। ( )

(h) प्रत्येक पदार्थ अनन्त गुणों और विशेषताओं का पुंज है। ( )

(i) खण्ड सत्य से अखण्ड सत्य के साक्षात्कार की यह प्रक्रिया अनेकान्तवाद दर्शन से ही सम्भव है। ( )

(j) 'स्यात्' का अर्थ शायद, सम्भवतः कदाचित् है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मुझसे मन में चंचलता, भय, अविश्वास, चिन्ता, अहंभाव और व्याकुलता उत्पन्न होती है। .....

(b) मैं कर्मों के आने के द्वारों को बंध कर देता हूँ। .....

(c) मुझमें कार्मण काय योग ही होता है। .....

(d) मैं कर्मों का आंशिक रूप से आत्मा से अलग (पृथक) हो जाना कहलाती हूँ। .....

(e) मैं अन्तराय कर्म के उदय से होना वाला परीषह हूँ। .....

(f) मैं एक समग्र जीवन दृष्टि हूँ। .....

(g) मैं सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक किया जाने वाला पौषध हूँ। .....

(h) मेरे द्वारा अव्यक्तवाद मत प्रवर्तित हुआ। .....

(i) बल तप आदि के कारण जीव मेरी निकाय में जाता है। .....

(j) सदयता और अमत्सरता आदि गुणों के कारण विशेष शुद्धि हो जाने से मेरा बन्ध होता है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **निसर्गज सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(b) **अवाय किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(c) **द्रव्येन्द्रिय को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

(d) **गुणस्थानों में कर्मों की सत्ता लिखिए।**

.....

.....

(e) **13वें गुणस्थान में पाये जाने वाले दस बोल लिखिए।**

.....

.....

(f) **अनिवृत्ति बादर गुणस्थान किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(g) **सुप्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(h) **अनुपालन विशुद्धि को समझाइए।**

.....

.....

(i) **पच्छन्नकालेणं आगार को समझाइए।**

.....

.....

(j) **धर्म श्रवण को दुर्लभ क्यों माना गया है ?**

.....

.....

(k) **अंतिम दो निह्नव के नाम तथा उनके द्वारा प्रवर्तित मत लिखिए।**

.....

.....

(l) **'चरे पयाइं परिसंकमाणो' की कोई एक व्याख्या लिखिए।**

.....

.....

(m) **'दीवप्पणट्ठेव' अथवा 'नेआउयं मग्गं' शब्द का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(n) **जीवत्व से क्या आशय है ?**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **प्रमाण और नय में क्या अन्तर है ?**

.....

.....

.....

.....

(b) **अवधिज्ञान और मनःपर्यव ज्ञान में कोई तीन अन्तर लिखिए।**

अथवा

आहारक शरीर की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(c) द्वितीयोपशम के भांगे, उनके गुणस्थान व स्थिति लिखिए।

अथवा

क्षायिक समकित प्राप्ति की प्रक्रिया के भांगे, उनके गुणस्थान व स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(d) गुणस्थानों में आत्मा द्वार लिखिए।

अथवा

गुणस्थानों में उपयोग द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(e) एक भव की अपेक्षा गुणस्थानों में आकर्ष लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(f) क्षयोपशम का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(g) **सप्तभंगी के अधिक व्यावहारिक भंगों को लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **अनेकान्त दृष्टि के भगवती सूत्र के उदाहरणों में से कोई एक उदाहरण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(i) **एकलठाण प्रत्याख्यान सम्बन्धी ध्यान रखने योग्य बातें लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(j) **निम्न गाथा का अर्थ लिखिए।**

समावण्णाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु।
कम्मा नाणाविहा, कट्ठु, पुढोविस्संभिया पया।।

.....

.....

.....

.....

(k) **निम्न गाथा का अर्थ लिखिए।**

असंखयं जीवियं मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, कण्णू वि हिंसा अजया गहिंति।।

.....

.....

.....

.....

(l) **सुप्त शब्द के तीन अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **छंदं निरोहण की कोई दो व्याख्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **निम्न सूत्रों के हिन्दी अर्थ लिखिए-**

1. **तदिन्द्रियानिन्द्रिय निमित्तम्।**
2. **यथोक्त निमित्त षड्विकल्पः शेषाणाम्।**
3. **द्विनवाष्टादशैकविंशति त्रिभेदा यथाक्रमम्।**
4. **निरूपभोगमन्त्यम्।**

.....

.....

.....

.....